Vol 4 Issue 8 Feb 2015

ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

......More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 3.4052(UIF)
Volume-4 | Issue-8 | Feb-2015
Available online at www.aygrt.isrj.org

GRT

रुपदेवगुण के साहित्य में मनोवृत्तियों का सूक्ष्म विश्लेषण

रेनु बाला **D/o** *श्री हंसराज*

सांराश : जीवन–मूल्यों की दृष्टि से आधुनिक परिवेश चकित कर देने वाला है साथ ही अराजक एवं संकटग्रस्त भी हैं। वर्तमान परिवेश में मानवीय मूल्य मिटते जा रहे है या परिवर्तित रूप में समाज के सामने आ रहे हैं। इसकी पृष्ठभूमि में कई अहम कारण निहित हैं। अद्यतन परिवेश और परिस्थितियों में धीरे–धीरे भारतीय संस्कृति का पश्चिमीकरण होता जा रहा है। कल तक हमारे जीवन में मूल्यों का भावना के साथ पूर्ण सामंजस्य बना रहा, किंतु आज के बुद्धिजीवी युग में मूल्यों को तर्क और उपादेयता के आधार पर रखा जाने लगा हैं। अतः हम मूल्यों के संकट में दुविधाग्रस्त हो गए हैं, किन्तु भारतीय कवि, इस संकट के समय में भी मूल्यों की बात कर रहा हैं।

प्रस्तावना :

आज प्रतिष्ठित मूल्यों को प्रस्तुत भर कर देने से कवि अपने दायित्व से मुक्त नही हो सकता। मूल्यों पर संकटग्रस्तता की स्थिति में आज का कवि प्राय मानवीयता की चर्चा करता हैं, किन्तु न तो मानवीयता की एक समुचित परिभाषा दिखलाई पड़ती है न कसौटी। वर्तमान जीवन जिन कारणों से मूल्यहीनता तक पहुचां है, उनमें पूंजीवादी सभ्यता, वैज्ञानिक एवम् तकनिकी प्रगति, भ्रष्ट राजनीति, बढ़ती हुई स्वार्थपरता आदि सबका मिला जुला हाथ है। इन सबके कारण आदर्श और यथार्थ, सिद्धांत और व्यवहार परस्पर असंतुलित हो गये है।

व्यक्ति समाज की महत्त्वपूर्ण इकाई है। जहाँ व्यक्यिों की विचारधारा परिवर्तित होगी, वहां अवश्य ही समाज के मूल्य भी परिवर्तित होंगे। भौतिकवादी अंधानुसरण में आज का व्यक्ति अपने अस्तित्व को भी विस्मृत कर चुका है। ऐसा लगता है जैसे शनैः शनैः पाश्चात्य सभ्यता भारतीय संस्कृति पर पूर्णरूप से हावी हो जाएगी। आज का मानव अंहकार भावना से ग्रस्त होने के कारण संवेदनशून्य होता जा रहा है। 'परिभाषाएं ही बदल गई हैं' कविता के माध्यम से मानवता की युगीन परिभाषा को समाज के समक्ष प्रस्तुत किया गया है। इस युग में सोच समझ कर कार्य करने वाले कायर की संज्ञा दी जाती है तथा गलत कार्य करने वाला व्यक्ति ही समझदार कहलाता हैं–

"इस युग में
जो गलत काम करता है
वह दमवाला है, मर्द है
जो सोच समझ कर
चलने की
कोशिश करता है
वह बेचारा
नपुंसक है, नामर्द है।" [1]

आज का मानव अपनों के प्रति विश्वासघात पर उतर आया है वह स्वजनों को मिटाकर स्वार्थसिद्धि में लीन हैं। इस मानवीय दुर्भावना को कवि ने निम्न पंक्तियों में व्यक्त किया हैं–

"मैंने कभी नहीं
सोचा था
कि तुम

क्रोधानल में जलकर
अपने चहरे को
विकृत करोगं
और षड्यंत्र में
हिस्सा ले
अपने चाहने वालों को
विष देने की
चेष्टा करोगे।" [2]

विज्ञान तथा तकनीकी क्षेत्रों में निस्संदेह आज प्रगति हुई हैं, लेकिन मानव के भीतर का इन्सान दम तोड़ रहा हैं। मशीनों ने अपनी तरह ही मनुष्य को संवेदनशून्य बना दिया है। उसके लिए सामाजिक रिश्ते गौण हो गए हैं तथा धनार्जन प्राथमिक लक्ष्य बन चुका हैं–

"सोचता हूँ
आदमी जो पहले कभी
इस दिन
इन रंगों में
अपने आपको सजाकर
सुन्दरता का
पर्याय कहलाता था
आज इतना असुन्दर क्यों लगने लगा है?" [3]

मानवीय रिश्ते शिथिल व बोझिल बनते जा रहे हैं। फिर भी जाने क्यों कविता में टूटते मानवीय संबंधों का चित्रण इस प्रकार हुगा हैं–

"न जाने क्यों
मन बोझ ढो रहा है
जो बनाए थे रिश्ते
बहुत ढीले थे
जो उगे थे पत्ते
अत्यंत पीले थे।" [4]

अर्थ प्रधान समाज में आज मानवीय रिश्ते पंगु प्रतीत हो रहे हैं। आज धन के आगे सभी रिश्ते झूठे और बेमानी हो गए हैं। भाई–बहन का प्यार, माता–पिता के प्रति आदर भाव, मैत्री संबंध क्षीण होते दिखई दे रहे हैं, क्योंकि मनुष्य केवल अर्थोपार्जन की और उन्मुख हैं। वह कम समय में अधिक पा लेना चाहता हैं, इसी कारण वह तनवाग्रस्त रहता है।

"पैसे की मृगतृष्णा में आराम कहाँ
इस भागा दौड़ी में राम कहाँ"
"कौन कहता हैल लोग आगे जा रहे
सच पूछो वे हैं पछता रहे
चक्र में फंसे हैं चकरा रहे
वे युगों पीछे अपने को पा रहे" [5]

भारतीय संस्कृति केन्द्र में मानवीय संवेदनाएं रही हैं। भ्रातृभाव, सहनशीलता सहयोग मनुष्य के धर्म रह हैं, लकिन आधुनिक सभ्यता ने जहां मनुष्य को स्वार्थी, आत्मकेन्द्रित तथा व्यक्तिवादी बना दिया है, वहीं मानव–मूल्यों से दूरी बढ़ा दी है। आज वह आदर्श व यथार्थ, एवं नैतिक व अनैतिक संघर्ष के बीच फंस चुका हैं। इसी के फलस्वरूप निराशा, कुंठा, एकाकीपन का विकास हुआ है। मनुष्य मानसिक रूप से जीर्ण–शीर्ण हो चुका है साथ ही उसे विकृत मानसिकता ने अपने चंगुल में फंसा लिया है।

"दरअसल बात यह है,
कि मैं त्रेता युग के आदर्शो में
पला व्यक्ति,
कलयुग के यथार्थ से टकराकर

चूर–चूर हो गया हूँ।" [6]

वर्तमान परिवेश में शिक्षित वर्ग अपने स्वतंत्र अस्तित्व की पहचान बनाए रखना चाहता है। भौतिकता और पाश्चात्य प्रभाव उसे पुराने मूल्यों से विद्रोह करने पर विवश कर देते हैं। वह धनार्जन की होड़ में लगा हुआ है। इस अवस्था में सामाजिकता से जो उसका दूर–दूर तक वास्ता ही नही हैं। माता–पिता के विचार उसे पुराने लगते हैं, जो कि वैचारिक मतभेद का कारण बनता हैं। युवा पीढ़ी में संस्कारहीनता हैं। उन्होंने समाज के वास्तविक ढाँचे को सूक्ष्मता से देखा परखा है। युवा वर्ग की संवेदनशून्यता को रूप देवगुण इन शब्दों में व्यक्त करते हैं–

"और जब वह जवान
व्यक्ति उसके
नजदीक आया
उसने उसको यूं ही देखा
न अभिवादन किया
न कोई बात की
और अकड़ता हुआ
सीधा निकल गया" [7]

जहां पुरानी पीढ़ी में मानवीय संवेदना पूर्ण रूप से व्याप्त है, वहीं युवा पीढ़ी इससे कोसों दूर है। युवा पीढ़ी अत्याधिक धनार्जन को ही अपना मूल्य मान चुकी है। दिन–रात मशीन की भांति खटते रहना ही उसकी दिनचर्या बन चुकी हैं।

"कुछ भी हो
यह तो मानना ही पड़ेगा
कि आज क मशीनी युग में
मनुष्य की तरक्की का
यह एक 'साइड इफैक्ट' है" [8]

आज एक ही छत के नीचे रहने वाले लोग एक–दूसरे के लिए बेगाने बनते जा रहे हैं। इसके मूल में आर्थिक अंधानुसरण ही छिपा हैं–

"कि बन्द कमरों में
सोने वाले लोग
इक्टठे रह कर भी
कितने अकेले हैं" [9]

रूप देवगुण मानवीय रिश्तों में आ रहे विखराव से चिंतित हैं। वे चाहते है कि कोई भी अजनबी न रहे। सभी रिश्ते मानवता से जुड़ जाएं–

"आओ हम
ऐसा क्यों न करें
कि रिश्तों के
शब्दकोष से
अजनबी शब्द को
सदा के लिए
निकाल कर फेंक दें।" [10]

हमारी आस्थाएं आज भी हमारे आन्तरिक व्यक्तित्व निर्माण में सहायक सिद्ध होती है। बुजुर्गों की प्रत्येक बात अनुभवय होती है, उसे मन में पूर्णतया उतार कर लेने से जीवन में सुकून मिलता है–

"और मुझे लगता है
कि हमारी आस्थाएं
जो डगमगा रही हैं
मेर भीतर अब भी
अपना प्रभुत्व जमाए बैठी है" [11]

बेहतर जीन जीने की लालसा में मनुष्य पलायनवादी हो गया है। वह स्वदेश का परित्याग कर विदेश में बसना चाहता हैं । ऐसी अवस्था में उसकी संतान दो संस्कृतियों के द्वंद्व में उलझ जाती है। इस संबंध में रूप देवगुण की निम्न पक्तियां द्रष्टव्य एवं ध्यातव्य हैं–

"दर्द हर पीढ़ी का
अपना–अपना होता हैं
जो उसे
स्वयं ही
सहना होता है।"
"पहली पीढ़ी
दूसरी पीढ़ी
का साथ चाहती हैं
पर दूसरी पीढ़ी
पीछे मुड़कर
नहीं देखती" [12]

कहा जा सकता है कि समय के साथ–साथ मानवीय स्वार्थवृति बढ़ती जा रही हैं। आज मानवीय रिश्तों में दरार आती जा रही है। इसके पीछे मूल कारण उसकी बढ़ती स्वार्थलिप्सा है। स्वार्थभावना ने मानव समाज को इस कदर जकड़ लिया है कि यह इसे ही उपकारी वास्तविकता मान बैठा है। अपने फायदे के लिए अगर दूसरों का गला काटना पड़े तो लोग परहेज नहीं करते है। आज के मानव की सोच संकीर्ण हो चुकी है। वह भाई–चारे से मुख मोड़ रहा है, क्योंकि स्वार्थ भावना उसके मानस में पूर्ण रूप से बस चुकी है।

1.रूप देवगुण, गुलमोहर मेरे आँगन में, पृ. 23
2.रूप देवगुण, एक बात पूछूँ, पृ. 50–51
3.रूप देवगुण, एक बात पूछूँ, पृ. 40
4. रूप देवगुण, जब तुम चुप रहती हो, पृ. 30
5. रूप देवगुण, आप सब है मेरे आस पास, पृ. 67
6.रूप देवगुण, आप सब है मेरे आस पास, पृ. 67
7.रूप देवगुण, मिलन को दूर से देखो, पृ. 47
8.रूप देवगुण, प्रश्न उठता है मेरे भीतर, पृ. 44
9.रूप देवगुण, प्रश्न उठता है मेरे भीतर, पृ. 14
10.रूप देवगुण, गली का आदमी, पृ. 14
11.रूप देवगुण, गली का आदमी, पृ. 32
12.रूप देवगुण, आप सब है मेरे आस पास, पृ. 52
13.रूप देवगुण, एक बात पूछूँ, पृ. 49
14.रूप् देवगुण, एक बात पूछूँ, पृ. 48

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org